Subject- Philosophy
Class:- B.A, Part-III (Hons)
Paper- V

विश्व-सम्बन्धी युक्ति
(Cosmological Argument)

Cosmos शब्द का अर्थ संसार है और विश्व-संबंधी युक्ति (Cosmological argument) उस युक्ति को कहा जाता है जो विश्व से संबंधित है। विश्व की व्याख्या करने के निमित्त यह युक्ति ईश्वर की सत्ता प्रमाणित करती है। यह युक्ति अत्यंत प्राचीन है। इसका प्रयोग प्लेटो (Plato) से लेकर आधुनिक युग के दार्शनिकों ने किया है। इस युक्ति के मुख्यत: दो रूप हैं। ये हैं (1) विश्व की आकस्मिकता पर आधारित युक्ति (2) कार्य कारण युक्ति।

संसार आकस्मिक (Contingent) है। आकस्मिक उसे कहा जाता है जिसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हो।

विश्व क्षणिक है क्योंकि यहाँ की हर चीजें क्षणिक है, उनका नाश होता है। इसी हेतु मानव ईश्वर की सत्ता स्वीकार करता है जो आवश्यक (necessary) स्वतंत्र (self dependent) तथा वास्तविक (Substantial) है। ईश्वर आकस्मिक तथा क्षणिक विश्व का आधार है।

प्रो० केयर्ड ने इस युक्ति को इन शब्दों में कहा है – "विश्व आकस्मिक है अथवा हमारी तात्कालिक अनुभूति विषयक विश्व आकस्मिक है, इसलिए एक सर्वथा आवश्यक प्राणी की सत्ता है।" थामस एक्विनास (Acquinas) ने विश्व की आकस्मिकता पर आधारित तर्क का प्रतिपादन किया है। उन्होंने कहा है कि जब हम विश्व की वस्तुओं का विश्लेषण करते है तब उन्हें आकस्मिक (Contingent) पाते है। आकस्मिक वस्तु उसे कहते है जो सर्वदा कायम नहीं रहता हो तथा जिसका अस्तित्व स्वतंत्र नहीं रहता हो।

एक्विनस के अनुसार कोई ऐसी सत्ता है जो इन विषयों को धारण करती है तथा इन्हें कायम रखने में सक्षम सिद्ध होती है। इसी अनिवार्य सत्ता को ईश्वर कहा गया है जो आकस्मिक जगत् का आधार है तथा स्वयं पूर्ण स्वतंत्र स्वयंभू एवं आवश्यक है।

लाइबनिज ने भी इस युक्ति का समर्थन किया है। उनके अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु आकस्मिक है क्योंकि हम इसका अनस्तित्व सोच सकते हैं। इसी प्रकार संपूर्ण विश्व का अनस्तित्व सोच सकते हैं, और इसलिए विश्व भी आकस्मिक (Contingent) है।

इस युक्ति का दूसरा प्रकार कार्य-कारण युक्ति है। यह संसार एक कार्य है। कार्य होने के कारण इसका कोई कारण अवश्य होगा। इस कार्य कारण रूपी श्रृंखला का अंत होना आवश्यक है अन्यथा अनवस्था दोष

(Infinite regress) उत्पन्न होगा। अतः सभी कार्यों का एक कारण है जो स्वयं अकारण है। उस कारण को ईश्वर कहा जाता है।

प्रो० फिलन्ट (flint) ने इस युक्ति को इस प्रकार अंगीकार किया है। जिस वस्तु का आरंभ होता है उसका कोई कारण होता है। विश्व एक कार्य है जिसकी शुरुआत हजारों वर्ष पूर्व हुई है। भूगर्भ शास्त्रियों (Geologists) ने यह सिद्ध किया है कि विश्व का प्रारंभ अत्यंत पहले हो चुका है। विश्व का कारण क्या है? विश्व सीमित है जिसकी उत्पत्ति की व्याख्या कोई सीमित कारण से संभव नहीं है।

प्रो० ~~क~~ फिलन्ट ने कहा है कि विश्व-विषयक कार्य कारण ईश्वर है (Nature is but the name for an effect whose cause is God). इस युक्ति के द्वारा हम सान्त से अनंत की ओर, सीमित से असीम

की ओर, और कार्य से कारण की ओर आ जाते है। जब हम कार्य-कारण युक्ति का विश्लेषण करते है तब इसमें अनेक सीढ़ियाँ पाते है जिनकी व्याख्या अपेक्षित है।

(1) प्रत्येक घटना का कुछ-न-कुछ कारण होता है। अकारण कोई घटना नहीं होती है।

(2) घटनाओं की श्रृंखला निरंतर बनी रहती है।

(3) घटनाओं की इस श्रृंखला का अंत नहीं दिखता है। ऐसी स्थिति में अनवस्था दोष से बचने के लिए इस श्रृंखला, जिसे विश्व कहा जाता है का आदि कारण खोजना अत्यावश्यक है।

(4) ईश्वर संपूर्ण जगत का कारण है परंतु ईश्वर का कोई कारण नहीं है। वह स्वयंभू है।

classmate
Date 28/07/20
Page 6

देकार्त ने भी विश्व-संबंधी युक्ति का समर्थन किया है। जहाँ तक हमारी सृष्टि का प्रश्न है मैं अपना सृष्टिकर्त्ता नहीं हो सकता है। यदि यह कहा जाए ~~के~~ हमारी सृष्टि माता-पिता ने की है तो प्रशन उठता है कि उन्हें किसने पैदा किया है। यदि इस प्रकार हम आगे बढ़ते जाए तो अनवस्था दोष का सामना करना होगा। अत: मेरी, मेरे माता पिता आदि का स्त्रष्टा ईश्वर है। विश्व-संबंधी युक्ति (Cosmological argument) को कार्य-कारण युक्ति (Casual argument) भी कहा जाता है परंतु इसके विपरित सभी कार्य कारण युक्ति को विश्व-संबंधी युक्ति नहीं कहा जाता।

शेष आगे नाग से

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara.